World Wide Journal of Multidisciplinary Research and Development

WWJMRD 2017; 3(1): 59-60
www.wwjmrd.com
Impact Factor MJIF: 4.25
e-ISSN: 2454-6615

प्रवीण पाठक
पी–एच.डी. विकास एवं शांति अध्ययन
महात्मा गान्धी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी
विश्वविद्यालय वर्धा, महाराष्ट भारत

Correspondence:
प्रवीण पाठक
पी–एच.डी. विकास एवं शांति अध्ययन
महात्मा गान्धी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी
विश्वविद्यालय वर्धा, महाराष्ट भारत

भारत छोड़ो आंदोलन में दिल्ली का योगदान

प्रवीण पाठक

सारांश
1942 में महात्मा गांधी जी द्वारा अंग्रेजो के खिलाफ शुरू किया गया आंदोलन कुछ ही समय के बाद पूरे भारत में आग कि तरह फैल गया। इस आंदोलन के प्रभाव से भारत के राजनीतिक का केंद्र दिल्ली भी अछूता नहीं रहा। अगस्त प्रस्ताव पारित होते ही दिल्ली में अंग्रेजो के खिलाफ लोग विरोध प्रदर्शन करने लगे दिल्ली अंग्रेजो के राजनीति का केंद्र थी। इसलिए ब्रिटिश हुकूमत ने बड़े स्तर पर दमन चक्र का सहारा लिया। क्योंकी दिल्ली की गूंज पूरे भारत में सुनाई पड़ती। 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में दिल्ली के बहुत से लोग शहीद हुए। इस आंदोलन में छात्रों से लेकर श्रमिक,मजदूर तक ने बढ़ चढ़ कर भाग लिए।

खोजशब्दों: दल्ली ,भारत छोड़ो आंदोलन ,महात्मा गांधी ,शहीद

प्रस्तावना
भारत का सदर मुकाम होने के कारण नेताओं की गिफ्तारी की खबर दिल्ली की जनता को 9 तारीख को ही दोपहर तक लग गई। किसी ने ऐलान नहीं किया पर बहुत सफल हड़ताल हुई और संध्या समय गांधी मैदान में एक विराट सभा हुई। 9 अगस्त को सुबह 10 बजे तक समूचे शहर में हड़ताल हो गई। दोपहर में घंटाघर के पास एक विशाल जुलूस रवाना हुआ ,जो सड़कों पर घूमता हुआ शाम को करीब गांधी मैदान में पहुँचा और एक सभा में परिणित हो गया। पर सरकार को पहले से ही खबर मिल चुकी थी और उसने शहर को पहले से ही काँटेदार तारों से सुरक्षति कर दिया था। फिर भी जनता इक्के–दुक्के करके नई दिल्ली पहुँची ,और वहाँ दुकानें बंद कराने लगी। अधिकांश दुकानें तो नुकसान के भय से पहले ही बंद हो चुकी थीं। 9 अगस्त को पुलिस की गोली–बारी में रतन लाल गौतम गंभीर रूप से घायल हो गए और उसी दिन उनकी मृत्यु हो गई। 11 तारीख को पुनः प्रातः 8 बजे लोग इकट्ठे हुए। किन्तु पुलिस पहले से ही तैयार ही थी। अब पुलिस वालों ने लोगों पर लाठीचार्ज करना शुरू कर दिया। प्रांतीय कांग्रेस कमेटी के नेता हकीम खलीलुलरहमान ,जो जुलूस के नेता थे ,गिरफ्तार कर लिए गए। जिससे लोग और भड़क गये। पुलिस ने भीड़ को नियंत्रित करने के लिए गोली बारी शुरू कर दी। जिसमें मंगल सिंह घायल हो गए। इन्हें घायल अवस्था में इरविन अस्तपताल में भर्ती कराया गया। लेकिन उनकी मृत्यु हो गई। 11 अगस्त को दिल्ह टाउन हाल के निकट दुली चंद के नेतृत्व में एक और विरोध जुलूस निकला। पुलिस की एक टुकड़ी ने जूलिस पर गोली–बारी शुरू कर दी। इस गोली–बारी में दुलीचंद की मृत्यु हो गयी। इस के बाद आमतौर पर से तोड़–फोड़ के कार्य शुरू हो गए
म्युनिसिपल दफ्तर ने हड़ताल मानकर दफ्तर बंद करना जरूरु समझा। इस घटना ने लोगों के क्रोध को भड़का दिया। इसके बाद लोगों ने टेलीफोन तथा टेलीग्राफ के तार काटना शुरू कर दिया। पुलिस वालों नें इस संबंध में बहुत से लोगों को गिरफ्तार किया ,किन्तु फिर भी तोड़– फोड़ का काम बंद नहीं हुआ। फतेहपुर के पास गोरे सैनिकों ने जनता पर गोली चलाई ,जिसमे दो व्यक्ति मारे गए तथा बहुत से लोगों को चोटें आई। शहर के सबसे बड़े रेलवे क्लीयरिंग अकाउंट्स आफिस अपर बजी हमला किया गया और उसको जला दिया गया। इन्कमटैक्स आफिस भी लोगों क क्रोध का शिकार हुआ। पहाड़गंज के फौजी बैरक तथा डाकखाने पर हमला कर दिया ,फौजी भाग गए। बिजली के तार काट दिए गए। पुलिस ने खूब गोलीय चलाई। 13 अगस्त को 150 व्यक्ति माते गए। घायलों को इरविन अस्तपताल में भर्ती किया गया ,किन्तु उपचार नहीं हो पाने के कारण कई लोगों की मृत्यु हो गई। एन. जी. आर . आफिस के 125 क्लर्कों ने सरकारी नौकरी से इस्तीफा दे दिया। 29 अगस्त को जनता ने सप्लाई डिपार्टमेन्ट के चेक विभाग को काफी हद तक जला डाला। दिल्ली क्लाथ मिल के प्रधान कैमिस्ट एम. शाह ने इस्तीफा दे दिया। दिल्ली क्लाथ मिल और बिड़ला मिल में पूरी तरह से हड़ताल रही। छात्रों ने तो खैर भाग लिया ही ,पर छात्राओं ने भी अफसरों के घरो पर धरना प्रदर्शन किया। 21 अगस्त को ब्रिटिश सरकार के खिलाफ विरोध जुलूस निकला। सरकार ने जुलूस को रोकने के लिए दमन का सहारा लिया। पुलिस ने जुलूस पर गोली बारी की इस गोलीबारी में संसार चंद गंभीर रूप से घायल हो गए। कुछ समय बाद उनकी मृत्यु हो गई। दिल्ली देश की राजधानी थी सरकार नहीं चाहती थी कि राजधानी में भी सरकार विरोधी जुलूस निकलें और प्रदर्शन हों। सरकार ने राजधानी में दमन नीति को और भी कड़ा कर दिया।
9 सितंबर को धारा 144 लगी हुई थी ,किन्तु फिर भी जनता ने एक जुलूस निकाला जो शहर कि गलियों में घूमा। शहर में हड़ताल रही। मुस्लिम भाइयों ने भी सहयोग दिया और चादनी चौक कि सभी दुकाने बंद रही। 14 सितंबर को कुछ छात्राओं ने थोड़े से मजदूरों को साथ लेकर असेंबली भवन में पिकेटिग किया। सबके हाथ में राष्ट्रीय झंडे थे। पुलिस ने लाठी चार्ज किया। बहुत से लोग घायल हो गए। इसी दिन पुरानी दिल्ली 11 गदहों का एक जुलूस निकाला गया। 11 गदहे वाइसराय कि कौंसिल के 11 भारतीय सदस्यों के प्रायिक थे ,जिनको अंग्रेज गृह सदस्य मि.मैक्सवेल हांक रहे थे।

आंदोलन में तोड़–फोड़
देहातों में भी तार काते गए। विजवासन और गुडगाँव के बीच बी. बी एंड सी. आई रेलवे की मालगाड़ी गिराई गई। चादनी चौक के सब–पोस्ट आफिस का कुछ हिस्सा तोड़– डाला गया। दिल्ली–करनाल लाइन पर एन. डब्लू . रेलवे के बादली स्टेशन पर रात को धावा बोला गया तथा तमाम रेकार्ड जला दिये गए। चादनी चौक में रेलवे बुकिंग आफिस के पास एक बम फटा। दिल्लीए रोहतक लाइन पर एन. डब्लू . रेलवे के घेरवा स्टेशन पर हमला किया गया और तमाम रेकार्ड फूँक दिये गए। नई दिल्ली के टेलीग्राम दृटेलीग्राफ के काफी तार काट डाले गए।

अखबारों पर प्रतिबंध

अखबारों पर कठोर सेंसरसीप लगा दिया गया। हिन्दी के दैनिक पत्र 'वीर अर्जुन' तथा उसके प्रेस से तीन हजार की जमानत मांगी गई। दिल्ली के प्रांतीय कांग्रेस कमेटी की सयुक्त मंत्री श्रीमती अरुणा आसफअली एवं श्री जुगालकिशोर खन्ना तथा श्री सी. के. नायर को फरार घोषित किया गया और उनकी संपप्ति जब्त कर ली गई।

दिल्ली आंदोलन में शहीद

1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में दिल्ली के कई लोग पुलिस की गोली से शहीद हुए। अमर सिंह ,बाबू राम ,बख्शी राम ,भरतू,बुद्ध सेन ,किशोरी लाल ,मंगल सिंह ,मुंशी राम ,राम बल्लभ ,राम सिंह ,रूप राम ,श्री राम ,तिर्खा राम ,आदि शहीद हुए।

आंदोलन की विशेषता

इस आंदोलन की विशेषता यह थी कि इसमें महिलाओं और पढ़ने वाली लड़कियों ने अगुवा बन कर भाग लिया। इस आंदोलन को सफल बनाने में अहम भूमिका निभाई।

संदर्भ सूची

1. सहाय ,गोविंद ,(1946).सन बयालीस की विद्रोह,नवयुग साहित्य सदन ,इंदौर ,पृष्ठ,287
2. गुप्त ,मन्मनाथ ,(2009).भारतीय क्रांतिकारी आंदोलन का इतिहास,प्रकाशक ,आत्माराम एंड संस ,न्यू दिल्ली ,पृष्ठ ,379
3. सहाय ,गोविंद ,(1946).सन बयालीस की विद्रोह,नवयुग साहित्य सदन ,इंदौर ,पृष्ठ,287
4. गुप्त ,मन्मनाथ ,(2009).भारतीय क्रांतिकारी आंदोलन का इतिहास,प्रकाशक ,आत्माराम एंड संस ,न्यू दिल्ली ,पृष्ठ ,379
5. कुमार ,वीरेंद्र ,(2011).भारत छोड़ो आंदोलन 1942 के शहीद ,अनुराग प्रकाशन ,न्यू दिल्ली ,पृष्ठ,282
6. सहाय ,गोविंद ,(1946).सन बयालीस की विद्रोह,नवयुग साहित्य सदन ,इंदौर ,पृष्ठ,287
7. कुमार ,वीरेंद्र ,(2011).भारत छोड़ो आंदोलन 1942 के शहीद ,अनुराग प्रकाशन ,न्यू दिल्ली ,पृष्ठ,283
8. वही,पृष्ठ,283
9. गुप्त ,मन्मनाथ ,(2009).भारतीय क्रांतिकारी आंदोलन का इतिहास,प्रकाशक ,आत्माराम एंड संस ,न्यू दिल्ली ,पृष्ठ ,380
10. सहाय ,गोविंद ,(1946).सन बयालीस की विद्रोह,नवयुग साहित्य सदन ,इंदौर ,पृष्ठ,287
11. वही ,पृष्ठ,288
12. गुप्त ,मन्मनाथ ,(2009).भारतीय क्रांतिकारी आंदोलन का इतिहास,प्रकाशक ,आत्माराम एंड संस ,न्यू दिल्ली ,पृष्ठ ,380
13. सहाय ,गोविंद ,(1946).सन बयालीस की विद्रोह,नवयुग साहित्य सदन ,इंदौर ,पृष्ठ,288
14. वही,पृष्ठ,289
15. गुप्त ,मन्मनाथ ,(2009).भारतीय क्रांतिकारी आंदोलन का इतिहास,प्रकाशक ,आत्माराम एंड संस ,न्यू दिल्ली ,पृष्ठ ,380
16. कुमार ,वीरेंद्र ,(2011).भारत छोड़ो आंदोलन 1942 के शहीद ,अनुराग प्रकाशन ,न्यू दिल्ली ,पृष्ठ,283
17. सहाय ,गोविंद ,(1946).सन बयालीस की विद्रोह,नवयुग साहित्य सदन ,इंदौर ,पृष्ठ,289
18. वही ,पृष्ठ ,290
19. वही,पृष्ठ,291